

जुनों या जानी के पास गूँह गह प्र
नामन नवनीक शर्वगा लोष बुद्ध-ही
हो बौद्धीति गनी विद्या निरी कशि
इस प्रविधि के प्रमुख लोषों को
उल्लेख विद्या बागा है, जो अग्रिम

(1) संभावना प्रतिनयन विधि का एक
प्रमुख लोष यह है कि इसका
वाक्यार्थ ऐसी परिस्थिति में करना
संभव नहीं होता है, जहाँ सम्पूर्ण
जनसंख्या या समाज को ज्ञान साध
करी को पहले से नहीं होता है।
वर्गीक इस तकनीक को प्रयोग करने
के लिए यह आवश्यक होता है कि,
शोधकर्ता को पूरी समाजसंख्या का
ज्ञान पहले से हो।

(2) इस प्रविधि का प्रयोग तब ही नहीं
किया जा सकता जहाँ समाज या जन-
संख्या को सम्यक् स्वरूप स्पष्ट नहीं
होता है। क्योंकि इस प्रविधि के उपयोग
का एक आवश्यक शर्त यह है कि समाज
वाक्यार्थ पता होना चाहिए जहाँ समाज या
जन संख्या का स्वरूप पूर्ण रूप से स्पष्ट
हो।

(3) संभावना प्रतिनयन प्रविधि के
आधार पर प्रतिद्वंद्वी के निर्माण करने
में समय अधिक लगता है, प्रांग
अधिक करना पड़ता है और धन
का व्यय भी अधिक होता है। सीमित
साधन एवं समय वाले शोधार्थी के लिए
यह प्रतिनयन प्रविधि उपयुक्त
नहीं है।

(4) जब बहुत छोटे प्रतिद्वंद्वी पर
साध्यमान करना होता है तो इसके
लिए संभावना प्रतिनयन (probability
sampling) उपयुक्त प्रविधि नहीं मानी
गई है। ऐसे शोधार्थी के लिए आसन्न
प्रतिनयन प्रविधि को ही उपयुक्त

जाता है इस प्रकार से चयन किए गए परिवर्ती के आधार पर प्राप्त परिणामों स्थिरता तथा संगतता पाई जाती है।

(4) पक्षपात से मुक्त (Free from bias) → संभाव्यता प्रतिचयन प्रविधि से प्राप्त परिवर्ती पक्षपात से मुक्त होना है। कारण यह परिवर्ती संभाव्यता के सिद्धान्त (Theory of probability) पर आधारित होता है। रिबर (Riber, 1989) के मतानुसार जो परिवर्ती संभाव्यता के सिद्धान्त पर आधारित होता है, वह पक्षपात रहित होता है।

(5) ज्ञान संभाव्यता संरचना (Known probability structure) → रिबर (Riber, 1989) के अनुसार संभाव्यता प्रतिचयन का एक मुख्य गुण यह भी है कि यहाँ ज्ञान संभाव्यता संरचना के अनुकूल घटनाओं या चरणों का चयन करके परिवर्ती का निर्माण किया जाता है। फलतः यह प्रविधि बंधन निरक हो पाता है।

(6) प्रतिचयन अशुद्धियों का आकलन (Estimation of sampling errors) → संभाव्यता प्रतिचयन प्रविधि का एक गुण यह है कि यहाँ इस प्रकार का निर्धारण करना संभव होता है कि परिवर्ती के चयन में कौन से अशुद्धि है या नहीं और यदि है तो इसकी मात्रा क्या है। इस प्रकार करने के लिए कुछ विशेष सांख्यिक विधियों का सहारा लिया जाता है। इस से संभाव्यता प्रतिचयन प्रविधि और अधिक वैज्ञानिक हो जाता है।

दोष (Demerits) →

Dr. Nand M. A. Denis (3)

माना गया है।

यदि शोधकर्ता को शोधों के परिणामों की प्रवृत्ति को जानने के लिए प्राथमिक अध्ययन (Pilot study) करने की आवश्यकता होती है तो इसके लिए प्राथमिक के निर्माण में सम्भाव्यता प्रान्चयन का व्यवहार करना उपयुक्त नहीं होता है।

ऊपर वर्णित दोषों के वास्तव में सम्भाव्यता प्रान्चयन प्राविधि (probability sampling technique) एक वैज्ञानिक प्राविधि है। इस प्राविधि से प्राप्त परिणामों की प्रवृत्ति विश्वसनीयता उच्च होती की होती है। फलतः इसके आधार पर निष्पत्ति प्राणी की जा सकता है और परिणामों का सामान्यीकरण भी किया जा सकता है।

The End